इतथें अली के जुदे हुए, बैठ फितने किया पसार।
कई हुइयां लडाइयां जमातसे, कई कतल किए तरवार।। १९ ।।

यहां से अली के मानने वाले जुदा हो गए। उनकी जमात में शैतान ने इतना झगड़ा फैला दिया जिससे कई लड़ाइयां हुईं और वह तलवार से कत्ल हुए।

लेने को बुजरकियां, जमात मारी समसेर।
मारे मराए यार अस्हाबों, ऐसा फितने किया अंधेर।। २० ।।

समाज में साहेबी लेने के वास्ते सभी ने अपनी ही जमात को मारा। शैतान ने सबके दिलों में बैठकर अपने ही लोगों को मरवाकर अंधेरा फैला दिया।

कोई न छोड़या घर आरब, बीच फितना हुआ सब में।
कह्या हदीसों सोई हुआ, सबुर न किया किननें।। २१ ।।

घर-घर में सबके अन्दर अरब में झगड़ा-फसाद फैल गया। अरब का कोई भी घर झगड़े से नहीं बचा। मुहम्मद साहब ने जो हदीसों में कहा था वही हुआ। साहिबी के वास्ते किसी ने सन्तोष नहीं किया।

ए सब फुरमाया हुआ, देखो आयतों हदीसों विचार।
सो आए सदी लग आखिरी, आई किबले से पुकार।। २२ ।।

रसूल साहब ने जो फरमाया था, वह आयतों और हदीसों में विचार करके देखो। यह झगड़ा आखिरी वक्त तक चला। अब मक्का से वसीयतनामे आकर इस बात की साक्षी देते हैं।

ए नीके दिल विचारियो, माएना हदीसों आखिरत।
फसल आई असौं भिस्तों की, हुआ दिन हक बका मारफत।। २३ ।।

हदीसों के आखिर के यह वचन अच्छी तरह से विचार कर देखना। अब श्री राजजी महाराज के अखण्ड ज्ञान का सूर्य उदय हुआ है। मोमिनों को परमधाम, ईश्वरीसृष्टि को अक्षरधाम और जीवसृष्टि को बहिश्तों में कायम होने का समय आया है।

महामत कहे ए मोमिनों, कही फितने की हकीकत।
अब कहूं सातों निसान, जिन पर मुद्दा कयामत।। २४ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! मैंने तुमको झगड़े की हकीकत बताई है। अब कयामत के बड़े सात निशानों का विवरण करती हूं, जिनसे संसार को कायमी मिलनी है।

॥ प्रकरण ॥ ७ ॥ चौपाई ॥ ५०१ ॥

बाब चारों निसानका-दाभतूलअर्जका निसान

आए लिखे बड़ी दरगाह से, इसलाम के खलीफों पर।
उठी बरकत मुसाफ सफकत, दुनी हुई ईमान बिगर।। १ ।।

बड़ी दरगाह (मक्का मदीने) से इस्लाम के मालिक औरंगजेब और काजी पर वसीयतनामे लिखकर आए कि मक्का से बरकत उठ गई, क़रान उठ गया, फकीरों की दुआएं उठ गईं और यहां से नूरी झण्डा (ईमान) उठ गया।

Nijanand App

बाकी रह्या क्या इसलाममें, जब हक मता लिया छीन।
सो लिखे सखत सौं खाएके, उठ्या हमसे नूर झंडा आकीन।। २ ।।

जब इस्लाम से यह सारी न्यामतें छीन ली गईं, तो मक्का में बाकी बचा ही क्या? उन्होंने कसम खाकर लिखा कि मक्का से यकीन का नूरी झण्डा उठ गया है।

निसान लिखे कयामत के, होसी जाहेर दाभा जिमी से।
जब नूर झंडा हादी ले गए, बाकी रही हैवानी जिमीमें।। ३ ।।

कयामत के जाहिर होने के जो निशान लिखे थे, उन्हें दुनियां जान करके भी हैवान के समान हो जाएगी। जब यकीन का नूरी झण्डा जबराईल फरिश्ता हिन्दुस्तान ले गए, तो वहां की जमीन पर हैवानियत (पशुता) ही केवल रह गई।

ए निसान बातून अव्वल कहे, सो मिले सब आए।
पर मुसाफ हकीकत जो खुले, तो आंखों देख्या जाए।। ४ ।।

कयामत के बातूनी निशान जो शुरू में रसूल साहब ने बताए थे, अब वह जाहिर हो रहे हैं। जिनको कुरान के रहस्य खुले, वह आंखों से देख रहे हैं।

सेर छाती पीठ गीदड़, मुरग गरदन हाथी कान।
सिर सींग तीखे आंखें सुअर, ए कह्या मुंह आदमी बिना ईमान।। ५ ।।

लिखा था कि एक जानवर पैदा होगा, जिसकी छाती शेर के समान होगी, पीठ गीदड़ के समान होगी, गर्दन मुर्गे के समान होगी, कान हाथी के समान होंगे, सिर पर पहाड़ी बैल जैसे तीखे सींग होंगे, आंखें सूअर की होंगी और शक्ल आदमी की होगी। यह आदमी ही हैवान है, जिसे यकीन नहीं है और ऊपर से पशुता के स्वभाव हो गए हैं।

सब अंग कहे हैवान के, और मुंह कहे इनसान।
होसी गए आकीन ए तबीयतें, ए देखो खुलासे निसान।। ६ ।।

इस तरह से सब अंग जानवर के बताए हैं और शक्ल आदमी की कही है। कुरान के बातूनी रहस्य समझकर देखो। यकीन न रहने से आदमी की ऐसी फितरत (गुण) हो जाएगी।

दाभतूल का निसान, ए देखो दिल धर।
इनका तालिब न देखे इने, माएने खुले बिगर।। ७ ।।

कुरान के बातूनी रहस्य खुले बिना दाभतुल के निशान को जाहिरी मुसलमान नहीं समझ सकते। ऐसा दिल में विचार करके देखो।

जानवर तो ए है नहीं, लिखी हैवानी तबीयत।
तो कह्या तालिब न देखसी, दुनी दाभा आखिरत।। ८ ।।

इस प्रकार का कोई जानवर नहीं होगा। इन्सान के ही ऐसे स्वभाव हो जाएंगे, इसलिए जाहिरी इसे समझ न सकेंगे, क्योंकि सारी दुनियां ही पशुतुल्य हो जाएगी।

दाभा गधा सों निसबत, अहेल जिमी दुनी जे।
बिन आकीन बिन मुसाफ, कही जिमी जाहेर दाभा ए।। ९ ।।

ऐसे जानवर का सम्बन्ध गधे के साथ होगा। दुनियां के मालिक (विष्णु भगवान) हैं। बिना यकीन और कुरान के ज्ञान के यह सारी जमीन ही पशुतुल्य हो गई।

Nijanand App

हैवान अकल दाभा जिमी, होसी लोक जाहेर सिफली के।
सो दाभा ताबे दज्जाल के, देखो निसान खुलासे।। १० ।।

संसार की धरती पर सभी की अक्ल पशुओं के समान हो जाएगी। इस प्रकार सब लोग नीच कर्म करने लगेंगे। फिर यह पशुतुल्य मानव शैतान अबलीस के अधीन हैं। यह कुरान में स्पष्ट लिखा है।

दुनी कही सिफलीय की, तिन जिमी न छोड़ी जाए।
ज्यों जीव खारे का खारे जल, त्यों मीठे का मीठे समाए।। ११ ।।

जो दुनियां झूठ की है, वह झूठे संसार को नहीं छोड़ सकती। जिस तरह से खारे जल का जीव खारे जल में रहता है और मीठे जल का मीठे जल में रहता है, उसी तरह झूठी दुनियां के लोग झूठ में ही रहते हैं।

बाएं हाथ आसा मूसे का, हाथ दाहिने मोहोर सलेमान।
मोहोर करसी पेसानी जिनकी, मुंह उज्जल तिन रोसन।। १२ ।।

कुरान में लिखा है कि जब इमाम मेंहेंदी आएंगे तो उनके बाएं हाथ में मूसा पैगम्बर की लाठी होगी और दाएं हाथ से सुलेमान पैगम्बर की मुहर होगी। जिसको मुहर छुआ देंगे उसका मुख उज्ज्वल हो जाएगा।

स्याह मुंह होसी तिन का, आसा चुभावे जिन।
उज्जल स्याह मुंह अपने, केहेसी रात और दिन।। १३ ।।

जिसको लाठी छुआ देंगे उसका मुख काला हो जाएगा। जब ऐसे पाक मुख वाले और काले मुख वाले अपने गुण अपने आप ही बयान करेंगे तो सत्य और झूठ का पता चल जाएगा।

स्वाल किए इत जाहेरी, मोहोर आसा होसी दिल रूए।
बाहेर स्याह मुंह उज्जल, क्यों कर देखे कोए।। १४ ।।

जाहिरी लोगों ने रसूल साहब से सवाल किया कि उज्ज्वल मुख और काला मुख दिल में होगा या ऊपर का जाहिरी मुख ऐसा होगा, क्योंकि जब तक जाहिरी मुख काला या उज्ज्वल न हो जाए, तब तक औरों को क्या पता चलेगा?

मोमिन कहे सुन मुस्लिम, भिस्त दोजख होसी सोभी दिल।
आग भिस्त ना इस्म तें, बाहेर मुंह छिपे स्याह उज्जल।। १५ ।।

मोमिन कहते हैं, हे मुसलमानो! सुनो, उज्ज्वल मुख वालों को बहिश्त मिलना है और स्याह मुख वालों को दोजख। यह भी दिल से ही पता चलेगा। दोजख की अग्नि और बहिश्तों के सुख नाम से नहीं जाने जाएंगे। बाहर का मुख उज्ज्वलता से और कालिख से छिपा रहेगा।

कह्या सूरत बाहेर बदले, जब दिल दई आग लगाए।
सो बाहेर फैल करे कई विध, सके न कोई छिपाए।। १६ ।।

जब दिल में पश्चाताप की आग लग जाएगी, तो बाहर की सूरत अपने आप बदल जाएगी। चाहे फिर कोई कितना ही बाहर से दिखावा करे, अपने आपको छिपा न सकेगा।

अपने हाथ मुंह अपना, मोहोर करे क्यों कर।
स्याह मुंह भी कहे हाथ इन, क्यों सब मुद्दा कह्या इन पर।। १७ ।।

अपने ही हाथ से अपना मुख लोग उज्ज्वल कैसे कर लेंगे? इसी तरह से कोई अपना मुंह काला कैसे कर लेगा? यह सब मुद्दा उनके दिल के भावों पर जाहिर होगा।

Nijanand App

छिपी बातें थी दिलमें, ए देखो जाहेर करी पुकार।
जोस दे न हादी का छिपने, या जीत या हार।। १८ ।।

श्री राजजी महाराज के जोश से दुनियां के दिलों की बातों को, चाहे वह जीतने वाली हो या हारने वाली हो छिपने नहीं देगा। यह बात बिल्कुल जाहिर लिखी है।

एही दाभा दुनी सिफली, सब केहेसी अपने मुख।
जो जैसा तैसा तिनों, छिपे न आखिर दुख सुख।। १९ ।।

इस झूठी दुनियां के लोग अपने मुख से ही अपने दुःख-सुख का बयान स्वयं करेंगे, क्योंकि जिन्होंने जैसा कर रखा है, वह अपना सब जानते हैं।

जब एही बातून जाहेर हुआ, पेहेचान पोहोंची माहें सब।
सब एक हैयातीय का, करसी सिजदा तब।। २० ।।

जब यह बातूनी रहस्य जाहिर हो गए, तो सब दुनियां वाले एक पारब्रह्म जो अखण्ड है, उसी का सिजदा बजाएंगे।

।। प्रकरण ।। ८ ।। चौपाई ।। ५२१ ।।

दज्जाल का निसान

कह्या दज्जाल अस्वार गधे पर, काना आंख न एक।
हक को न देखे आंख जाहेरी, रूह नजर न बातून नेक।। १ ।।

कुरान में लिखा है कि वक्त आखिरत में शैतान गधे पर सवार होगा, जिसकी एक आंख नहीं होगी। वह अपनी जाहिरी आंख से खुदा को नहीं देखेगा और आत्मदृष्टि उसके पास नहीं होगी।

अजाजील काना तो रानियां, जो बातून नजर करी रद।
देख्या उपली आंखसों, आदम वजूद गलद।। २ ।।

वह ऊपर की आंख से झूठे संसार की नजर से आदमी के ऊपर के शरीर को ही देखेगा, इसलिए अजाजील को काना कहकर रद्द कर दिया है, क्योंकि इसकी बातूनी नजर नहीं है।

गधा बड़ा दज्जाल का, कह्या ऊंचा लग आसमान।
पानी सात दरियाव का, पोहोंच्या नहीं लग रांन।। ३ ।।

अजाजील रूपी दज्जाल का गधा ऊंचा आसमान तक बताया है। कहा है कि सात समुद्र का पानी उसकी जांघ तक नहीं पहुंचेगा।

गधा एता बड़ा तो है नहीं, कह्या हवा तारीक मकान।
ए जो कुंन केहेते पैदा हुई, सिफली दुनी जहान।। ४ ।।

इतना बड़ा गधा तो कहीं है ही नहीं। इस निराकार के सारे ब्रह्माण्ड को ही गधे का आकार बताया है। कुंन शब्द से पैदा हुई झूठी दुनियां ही गधे का रूप है।

ना तो एता बड़ा गधा, होसी कैसा कद दज्जाल।
सो दज्जाल गधा जब गिर पड़े, तले दुनी रहे किन हाल।। ५ ।।

वरना इतना बड़ा गधा हो तो उसके अस्वार का कद कितना बड़ा होना चाहिए। जब दज्जाल, सवार तथा उसका गधा नीचे गिर पड़े तो दुनियां की क्या हालत होगी?

Nijanand App